Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

हिन्दी भाषा: कल आज और कल

Sonam*

M.A. (Hindi) B.A, B.Ed., Village Rajpura Sahani, Tehsil & District Sirsa

सार – ***राष्ट्रभाषा के मामले को, जो इस देश में बेहद उलझ गया है और उस पर लिखना या बात करना औसत दर्जे के प्रचारकों का काम समझा जाने लगा है, अगर मैं भी टाल देता तो शायद मेरे हित में ही होता। आज अपनी भाषा में लिखने पर भी लोग भाषा पर बात करना अवांछित समझते हैं; देश में रहकर देश पर बात करने में शरमाने लगे हैं – उन्होंने कोई ऊँची बात ही सोची होगी, जो मैं नहीं सोच पाया- शायद इसीलिए यह पुस्तक आ सकी है।***

भाषा का प्रश्न मानवीय है, खासकर भारत में, जहाँ साम्राज्यवादी भाषा जनता को जनतंत्र से अलग कर रही है। हिन्दी और अंग्रेजी की स्पर्द्धा देशी भाषाओं और राष्ट्रभाषा के द्वंद्व में बदल गई है, मनों को जोड़ने वाला सूत्र तलवार करार दे दिया गया है, पराधीनता की भाषा स्वाधीनता का गर्व हो गई है। निश्चय ही इसके पीछे दास मन की सक्रियता है। कैसा अजब लगता है, जब कोई इसलिए आंदोलन करे कि हमें दासता दो, बेड़ियाँ पहनाओ!

----------X----------

हिन्दी बिन्दी है सुघड़, भारत माँ के भाल की।

आवश्यकता है महा हिन्दी ही इस काल की।।

जब हम देश के रंगमंच पर खड़े होकर विहंगम दृष्टिपात करते हैं तो पाते हैं कि हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जो देश को एकता एवं अखण्डता के सूत्र में बाँध सकती है। 14 सितम्बर 1949 को संवैधानिक दृष्टि से हिन्दी को राजभाषा घोषित किया गया था। विडम्बना यह है कि आज आजादी के 70 वर्ष व्यतीत होने पर भी हिन्दी को राजभाषा के रूप में लागू नहीं किया गया। वस्तुतः राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से हिन्दी को राजभाषा बनाना जरूरी है। हिन्दी वस्तुतः सर्वांगीण उन्नति का मूल स्त्रोत है। आधुनिक काल के महाकवि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की निम्न काव्य पंक्तियों पर दृष्टिपात करना अत्यंत आवश्यक है-

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।

बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को सूल।।1

आजादी के साथ महात्मा गाँधी ने कहा था कि राष्ट्रभाषा के बगैर राष्ट्र गूंगा है। राष्ट्र के लिए राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगीत की तरह राष्ट्रभाषा भी अनिवार्य है। जिस प्रकार राष्ट्रगीत एवं राष्ट्रध्वज को सम्पूर्ण राष्ट्र गौरव का स्थान प्रदान करता है उसी प्रकार से राष्ट्रभाषा को भी गौरवपूर्ण स्थान देना होगा।2

वस्तुतः हिन्दी भाषा का प्रश्न राजनीतिक नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक एवं सामाजिक है। भारत को अपनी पहचान के लिए हिन्दी को सर्वोपरि स्थान देना होगा। रोजमर्रा के व्यवहार, शिक्षा-दीक्षा के माध्यम एवं अन्तर्राष्ट्रीय कामकाज की भाषा के रूप में हिन्दी को प्राथमिकता देना हमारा परम कर्तब्य है। डॉ. सिद्धेश्वर वर्मा के अनुसार जिस रोज भारत एक राष्ट्र के रूप में ऐसा करने का संकल्प ले लेगा उस रोज भारत के सांस्कृतिक और सामाजिक विकास के मार्ग की सारी मानसिक बाधाएँ दूर हो जाएँगी और भारत का नाम 'जगतगुरु' के रूप में मान्य होगा।3

हिन्दी के प्रचार-प्रसार में महर्षि दयानंद तथा आधुनिक काल के साहित्यकारों की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। इन सभी साहित्यकारों ने एक स्वर से हिन्दी के गौरव का बखान किया है। नागपुर में हुए प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन में सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव स्वीकृत किया गया था कि संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी को विश्व व्यापी मान्यता प्रदान किया जाए। तत्कालीन विदेश मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने संयुक्त राष्ट्र संघ में अपना भाषण हिन्दी में दिया था। तत्कालीन विदेश मंत्री श्री वी.पी. नरसिंहाराव ने भी संयुक्त राष्ट्र संघ में अपने भाषण का प्रारंभ हिन्दी में किया लेकिन सरकारी तौर पर कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया। वस्तुतः हिन्दी अपनी ताकत से विश्व में अपना कदम रख रही है। विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में हिन्दी के शोध पर

www.ignited.in

महत्त्वपूर्ण कार्य हो रहा है। आज यह सर्वमान्य है कि एक समर्थ एवं समृद्ध भाषा के रूप में हिन्दी की मान्यता बढ़ती जा रही है।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि प्रथम व द्वितीय विश्व हिन्दी सम्मेलनों में संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी को मान्यता दिलाने के साथ-साथ विश्व हिन्दी विद्यापीठ की स्थापना की गई। द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी सिखाने के लिए विश्व हिन्दी विद्यापीठ को यह कार्य सौंपा गया, लेकिन केन्द्रीय सरकार ने इसे स्वीकृति प्रदान नहीं की। डॉ. सिद्धेश्वर प्रसाद के अनुसार सांस्कृतिक दासता की जड़ राजनीतिक दासता की जड़ से भी अधिक गहरी होती है और इसके सूक्ष्म को पहचान पाना कठिन है। लेकिन जिस प्रकार से आर्थिक स्वतंत्रता के बिना राजनीतिक स्वतंत्रता निरर्थक होती है, उसी प्रकार से सांस्कृतिक स्वतंत्रता के बिना राजनीति और आर्थिक स्वतंत्रता भी प्राणहीन होती है। सांस्कृतिक मूल्य ही सामाजिक जीवन को यह आधार प्रदान करती है, जिस पर राजनीतिक और आर्थिक ढांचा खड़ा किया जाता है। यदि सांस्कृतिक नींव कमजोर रहे तो स्वभावतः सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक ढांचा भी कमजोर होगा।4

यहाँ उल्लेखनीय है कि देश के महान् विभूतियों ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार पर पुरजोर शब्दों में वकालत की जिनमें प्रमुख हैं- स्वामी दयानंद, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, लोकमान्य तिलक, श्री अरविन्द आदि। उक्त महानुभावों का मत है कि हम स्वराज्य के साथ-साथ उन मूल्यों के लिए लड़ रहे हैं, जिन्हें अंग्रेजी राज्य ने करीब-करीब समाप्त कर दिया है। भारतीय लोगों की मानसिकता को हिन्दी के माध्यम से बदला जा सकता है।

आज के इस तकनीकी युग में हिन्दी की दशा और दिशा पर्याप्त सुदृढ़ है। वैज्ञानिक आविष्कारों ने हमारी जीवनशैली को प्रभावित किया है, उनमें से कंप्यूटर भी एक है। मानव को अनेकानेक सुविधा प्रदान करने और उसकी गतिशीलता को प्रभावित करने में कंप्यूटर का विशेष महत्त्व है। कंप्यूटर ने आज सार्वभौम लोकप्रियता हासिल कर ली है। इसकी संग्रह क्षमता अतुलनीय है। ध्वनि, डाटा, चित्र, प्रोग्राम, गेम्स, लाखों शब्दों को कम स्थान में संग्रहित करके रखना, स्मृति में चाहे जितनी सूचनाएँ सुरक्षित रखना इसी के द्वारा संभव है।5 मानव तथा कम्प्यूटर के मध्य संपर्क स्थापित करने के लिए जिस भाषा का प्रयोग किया जाता है उसी को कम्प्यूटर भाषा कहा गया है। आज लगभग दो सौ से अधिक कम्प्यूटर भाषाएँ प्रचलन में हैं। इसकी अपनी नियमावली है, जिसके द्वारा मुद्रण, टँकण, कोश निर्माण, भाषा-प्रशिक्षण, सूचना-संचयन, मशीन अनुवाद, पाठ-बोधन, पाठ प्रजनन प्रणाली, मानव-मशीन, स्पीच टू टैकस्ट सिस्टम इत्यादि कार्य संपादित होते हैं। वर्तमान में कम्प्यूटर में हिन्दी का अनुप्रयोग भिविन्न स्तरों पर हो रहा है। यथा-

(1) पुस्तक लेखन के क्षेत्र में (2) पुस्तक प्रकाशन में (3) हिन्दी टाइपिंग के क्षेत्र में (4) हिन्दी में पत्रादि लेखन के संदर्भ में (5) हिन्दी में प्रोग्राम बनाने में (6) अनुसंधान के क्षेत्र में (7) सूचीकरण में (8) तालिका-निर्माण में (9) प्रश्न-पत्र बनाने में (10) उत्तर-पुस्तिकाएँ जांचने में (11) वर्तनी को शुद्ध करने में आदि कार्यों में हिन्दी तथा देवनागरी लिपि का सक्रिय योगदान है।6

विश्व के प्रथम हिन्दी पोर्टल का विकास वेब दुनिया 'डॉटकॉम' (इंडिया लिमिटेड) को है। इस पोर्टल के जनक श्री विजय छजलानी को है। इन्होंने प्रवासी हिन्दी भाषा-परिवारों की जरूरतों को पूर्ण करते हुए इंटरनेट पर हिन्दी का प्रयास किया। यह वेबसाइट अत्यंत लोकप्रिय हुई ओर यहीं से देवनागरी लिपि की शक्ति और संभावनाएँ उजागर हुईं। आज इसी के माध्यम से प्रवासी भारतीय वेब दुनिया समाचार, संस्कृति, ई-व्यवस्था, मनोरंजन आदि अनेक क्षेत्रों की सूचनाओं से लाभान्वित हो रहे हैं। यूनिकोड, आई.एस.सी.आई. तथा इन्क्रीप्ट जैसे मानव को आधार मानकर वेब दुनिया ने अपने कदम तेज कर दिये हैं। इस प्रकार हिन्दी और देवनागरी लिपि को विश्व के मानचित्र पर इन्टरनेट तथा वेबसाइट के द्वारा स्थापित करने का श्रेय इंदौर के पत्र 'नई दुनिया' को है। अब कम्प्यूटर, इंटरनेट, वेबसाइट में देवनागरी लिपि के प्रयोग से नित नई संभावनाएँ उभर रही हैं। कंप्यूटर में नागरी लिपि का प्रवेश कराने का श्रेय 'इलेक्ट्रॉनिक' कार्पोरेशन ऑफ़ इंडिया', हैदराबाद को है। जापान की एक कंपनी ने देवनागरी में तीव्र गति से मुद्रण की प्रणाली विकसित की है।

हिन्दी के किास में अनुवादक सॉफ्टवेयर भी महत्त्वपूर्ण प्रतीत हो रहा है। यह सॉफ्टवेयर अंग्रेजी के मूल पाठ को हिन्दी से अनुवाद कर व्याकरण की अनुपालना करता है। कोश वैज्ञानिक की मान्यता है कि ''जब हम कम्प्यूटर के नये शब्दों तथा प्रयोगों को संकलित कर कोश को अप-टू-डेट करने का प्रयास करते हैं, तब तक दो गुने नये शब्द-अर्थ एवं प्रयोग सामने आ जाते हैं।''7 कम्प्यूटर के हिन्दी अक्षर बेहद आकर्षक हैं। कम्प्यूटर के प्रयोग से हिन्दी भाषा में कम समय में अधिक और अच्छा कार्य संपादित हो रहा है।

वर्तमान में मुद्रण-प्रकाशन का कार्य कम्प्यूटर द्वारा ही हो रहा है। फलस्वरूप प्रकाशन सुंदर, श्रेष्ठ और सुरुचिपूर्ण

www.ignited.in

स्वरूप से उपलब्ध हो रहा है। इससे प्रत्यक्ष लाभ यह हुआ है कि हिन्दी में छपी पुस्तकों की बिक्री-संख्या बढ़ी है। इससे हिन्दी का प्रचार-प्रसार भी हो रहा है। आज कामकाजी हिन्दी का प्रयोग प्रशासन में होने लगा है। प्रत्येक दफ्तर, शिक्षा-संस्थान, कला-संस्कृति, उद्योग व्यापार-जगत् पर्यावरण, मैडिकल चिकित्सा-क्षेत्र, अनुसंधान क्षेत्र, परिवहन, रेल-बस, आरक्षण, बैंक, बीमा, डाकतार विभाग, टी.वी. से लेकर इंटरनेट तक अनेक संभावनाएँ संभव है। वस्तुतः जहाँ-जहाँ कम्प्यूटर का प्रयोग होगा, वहाँ-वहाँ देवनागरी लिपि का प्रचार-प्रसार स्वतः हो जाएगा। भविष्य में कम्प्यूटर के माध्यम से हिन्दी विश्व-पटल पर छा जाएगी।

भूमंडलीकरण, वैश्वीकरण एवं बाजारवाद के इस दौर में हिन्दी का वर्चस्व बढ़ा है। भारत में स्थापित विदेशी कम्पनियाँ अपने कार्यकर्ताओ को हिन्दी सीखने पर बल दे रही है। विदेशों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में बल दिया जा रहा है। यूरोप के हिन्दी विद्वानों में प्रो. लोठार लुत्से, प्रो. गात्स्लाफ, होलैंड के प्रो. शोकर, पोलैण्ड के ब्रिस्की, इटली के प्रो. तुर्वीयानी, फ्रांस के प्रो. निकोल बलवीर, चेकोस्लोवाकिया के प्रो. स्मैकल आदि विद्वान् हिन्दी के प्रचार-प्रसार में लगे हुए हैं। इन विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से हिन्दी की सेवा की है और इस दिशा में सतत् प्रयत्नशील हैं। अमेरिका में दर्जनों विश्वविद्यालय ऐसे हैं, जहाँ हिन्दी का पठन-पाठन होता है। मॉरिशस, फीजी और सूरीनाम देशों में हिन्दी की लोकप्रियता बढ़ रही है। इन देशों से हिंदी की अनेक पुस्तकें एवं पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं। फीजी के संविधान में हिन्दी के प्रयोग का प्रावधान किया गया है। मॉरिशस के लोग तो हिन्दी को अपने जीवन का अभिनन्न अंग मानते हैं। फीजी के विवेकानंद शर्मा, जे.एस. कँवल, बलराम वशिष्ठ आदि विद्वानों ने अपनी रचनाओं के बल पर हिन्दी के भंडार को समृद्ध किया है। यदि ऐशियाई देशों की ओर ध्यान दिया जाए तो जापान के प्रो. के. दोई की हिन्दी-सेवाओं को नहीं भुलाया जा सकता। उन्होंने जापान के सैंकड़ों विद्यार्थियों को हिन्दी के अध्ययन के लिए प्रेरित किया है। हिन्दी के प्रचार-प्रसार ऐशियाई देशों में बंगला देश, श्रीलंका को नहीं भुलाया जा सकता। नेपाल के अनेक लेखक और पत्रकार निरंतर हिन्दी-सेवा में लगे हुए हैं। चीन के विश्वविद्यालयों एवं प्रसिद्ध शिक्षण संस्थाओं में हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन अनेक वर्षों से हो रहा है। प्रेमचंद के प्रसिद्ध उपन्यास 'निर्मला' का चीनी भाषा में अनुवाद हुआ है। इसी प्रकार थाईलैंड, मलेशिया, सिंगापुर आदि देशों में हिन्दी के पठन-पाठन का दौर चल रहा है। भारत से बाहर लगभग 100 विश्वविद्यालयों में हिन्दी का पठन-पाठन हो रहा है। वस्तुतः हिन्दी का भविष्य उज्ज्वल है। चंद वर्षों में हिन्दी विश्वव्यापी भाषा बन जाएगी- इसमें कोई संदेह नहीं है।

संदर्भ:

1. सं. लालचंद गुप्त 'मंगल', आठ श्रेष्ठ कवि, पृ. 5
2. प्रो. सिद्धेश्वर प्रसाद, सं. विश्व हिन्दी, पृ. 203
3. प्रो. सिद्धेश्वर प्रसाद, अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ में हिन्दी, 'विश्व हिन्दी', पृ. 203
4. वही, पृ. 202
5. डॉ. सरोज गुप्ता, कम्प्यूटर में हिन्दी का अनुप्रयोग, साहित्य, भक्ति और दर्शन का वैभव, पृ. 1253
6. वही, पृ. 1255
7. वही, पृ. 1259

Corresponding Author

Sonam*

M.A. (Hindi) B.A, B.Ed., Village Rajpura Sahani, Tehsil & District Sirsa